ग़फ़लत से निकल कर अल्लाह की शरण में आइये

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इस दुआ को ''बिस्मिल्लाहिल लज़ी ला यजुर्रो मआ इस्मिही शैयुन फिल अर्जी वला फिस्समाई वहुवस्समीउल अलीम'' अनुवाद ''उस अल्लाह का नाम लेता हूं जिस के नाम से ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती और वह सुनने वाला और जानने वाला है'' रोज़ाना सुबह व शाम तीन बार पढ़े तो उसे कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुंचा सकती।

मोमिन बन्दे की शान यह है कि वह हमेशा अपना संबन्ध अपने पालनहार से जोड़े रखता है उसी से हर तरह की मदद और पनाह (शरण) माँगता है और उसी से दुनिया आख़िरत की उम्मीद रखता है। नबियों (पैग़म्बरों) अलैहुमुस्लाम के बाद इस धरती पर सब से श्रेष्ठ जमाअत सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम की है जिन की खूबी यह है कि अल्लाह ने उनसे अपनी रिज़ामन्दी का इज़हार किया यही वजह है कि वह हमारे लिये आदर्श हैं उनकी खूबियों में से एक खूबी यह भी है कि वह भलाई के कामों में पेश पेश रहते और अल्लाह से अपना संबन्ध जोड़े रखते थे। इस लिये हमें उनके आदर्श पर चलते हुए अल्लाह से अपना संबन्ध जोड़े रखना और अल्लाह की पनाह तलब करनी चाहिए।

यह हक़ीक़त है कि ग़फलत इन्सान को अल्लाह की याद और उस की इबादत से दूर कर देती है इस लिये हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम अपने आप को गफलत से निकाल कर अपने अन्दर जागरूकता पैदा करें और अल्लाह की इबादत करें। मौजूदा स्थिति में खास तौर से कोरोना महामारी में जहां लाखों लोग अपनी जान गवां चुके हैं और असंख्य लोग प्रभावित हुए हैं ऐसे में हमें अपने आप को अल्लाह के हवाले कर देना चाहिए।

ऊपर की हदीस में पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें यही तालीम दी है कि अल्लाह के नाम से दुनिया की तमाम कठिनाइयों से बचने के लिये दुआ की जाए और इसके अलावा पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें जो दुआएं बताई हैं उनका सुबह शाम एहतमाम करें इबादत करें।

कुछ दुआओं का यहां उल्लेख किया जा रहा है।

''अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ूबिका मिनल बर्सी वल जुनूनी वल जुजामी व सैइयिल अस्क़ामी'' ''अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ूबिका मिन ज़वाली नेमतिका व तहौऊली आफ़ियतिका व फुजाअती निक़मतिका व जमीई सख़ा-तिका''

''या हैयो या क़ैयूमो बि रहमतिका अस्तग़ीसू''

मौजूदा महामारी और परेशानी की इस घड़ी में पूरी मानवता प्रभावित है। अल्लाह से दुआ है कि वह जल्द से जल्द हम सबको ग़फलत से निकाल कर अपनी पनाह में ले ले और तमाम किस्म की महमारी से पूरी मानवता को सुरक्षित रखे। आमीन

मासिक

इसलाहे समाज

सितंबर 2020 वर्ष 31 अंक 4

मुहर्रमुल हराम 1442 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली सलफ़ी

संपादक

एहसानुल् हक़्

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये
- टोटल पेज 28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़्

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. ग़फ़लत से निकल कर अल्लाह की ... 2
2. मौजूदा हालात पर क़ाबू कैसे पाएँ? 4
3. हमें एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए 6
4. इस्लाम और अम्न व सुरक्षा 7
5. गुरुद्वारा पर हमला निन्दनीय 9
6. औलाद की तर्बियत 10
7. अहले हदीस कम्पलेक्स में ध्वजारोहण समारोह 12
8. कोविड-१९ से मुतअल्लिक़ ज़िम्मेदारियाँ 14
9. कोविड-१९ महामारी (प्रेस रिलीज़) 15
10. अगर मज़दूर मेरे देश के मरते रहे... 16
11. लॉकडाउन का खुले दिल से पालन करें 17
12. एलाने दाख़िला 18
13. विशाखापट्टनम गैसे लीक (प्रेस रिलीज़)19
14. मज़दूरों की मौत अत्यन्त दुखद 20
15. खुवाजा अमजेरी रह० 21
16. मौलाना अब्दुल हई इस्लाही का निधन 22
17. मौलाना ऐनुल बारी का इन्तेक़ाल 23
18. मौलाना मुहम्मद मुक़ीम फैज़ी का निधन 24
19. डा० अब्दुल बारी साहब का इन्तेक़ाल 25
20. मानवता के शुभचिंतक 26
21. विज्ञापन 28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

मौजूदा हालात पर क़ाबू कैसे पाएँ?

असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

मौजूदा हालात पर क़ाबू पाने के लिये अपने आप को क़ाबू में रखें और अल्लाह न करे, अगर हमारी आज़माइशों और ज़िम्मेदारियों का सिलसिला तूल पकड़ता है तो बताइए उस वक़्त हम क्या करेंगे? हमदर्दी जता देना और राह बता देना निसन्देह बड़े सवाब का काम है "भलाई के कामों की तरफ मार्ग दर्शन करने वाला भलाई करने वाले की तरह है" मगर इतना ही काफ़ी नहीं है इसके अलावा परेशानियों और कठिनाइयों से बचने के लिये अपनी पूरी ताक़त भी इस में झोंक दें। यूसुफ अलैहिस्सलाम ने सात साल के अकाल में भी उस मिसरी और फिरऔनी क़ौम को बचाने की ठान ली जिस की हुकूमत के कुछ कर्मियों ने उनको जेल की सलाख़ों के पीछे निर्दोष मानते हुए भी डाल दिया था। यूसुफ अलैहिस्सलाम ने इस मुश्किल घड़ी में एक तो मानवता के कर्तव्य को निभाना काफी समझा दूसरे अल्लाह ने उनको ज्ञान और बुद्धिमत्ता और मामलात की गहराई तक पहुंचाने की जो क्षमता दे रखी थी उसकी रोशनी में स्वयं आगे बढ़कर अकाल की जटिल समस्या को अपने उपाय से सुलझाने और समझाने का व्यवहारिक आदर्श पेश किया और पूरी क़ौम को अकाल और भुखमरी के अत्यंत सख्त और बड़े संकट की घड़ी से बचा लिया। मैं मुसलमान और इस्लाम धर्म का विद्यार्थी होने के आधार पर यह कह सकता हूं कि कुरआन व हदीस और उम्मत की तारीख में ऐसे असंख्य निर्देश, सिद्धांत और उदाहरण मौजूद हैं जिनको सामने रख कर दुनिया के बड़े से बड़े संकट और जटिल समस्या खास तौर से आर्थिक संकट से निपटा जा सकता है और भुखमरी से राष्ट्र और मानवता को बचाया जा सकता है। इस वक़्त हम जिस राह पर लग चुके हैं वह एक बड़ा संकट और सबसे ख़तरनाक चुनौती और मुसीबत भुखमरी की भी हो सकती है। कोरोना महामारी की संगीनी का तकाज़ा है कि लंबे लॉक डाउन और तालाबन्दी के बाद लॉक डाउन के सरकारी कानून और मेडिकल निर्देशों को अनिवार्य रूप से लागू किया जाए और इस पर सख्ती से अमल भी होना चाहिए और बहुत हद तक इस पर अमल भी हो रहा है और हर वर्ग और हर स्तर से इसकी अहमियत व ज़रूरत पर रोशनी डाली जा रही है, एलान किया जा रहा है, पाबन्दी कराई जा रही है और इस सिलसिले में कोई भी संगठन, जमाअत, संस्था और शख्सियत व मिल्लत अपनी यथा शक्ति प्रयास और अपील और अमल करते नहीं थक रही है। सब सरकार का साथ दे रहे हैं। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने भी इस घातक महामारी के पहले चरण से ही संभावित हद तक कुरआन व हदीस और अक़्ल व अनुभव की रोशनी में सरकारों, ओलमा और डाक्टरों के निर्देशों पर अमल करने कराने और इसको सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है और खुद अपने तौर पर भी भूखों, मुसाफिरों और मरीज़ों को खाना खिलाने, उनकी मदद करने और उनमें गल्ला और दवा बाँटने में लग गए। हम ईमानी कुव्वत और इन्सानी हमदर्दी के जज़बे से और अपना असली कर्तव्य समझ कर सबसे पहले दिन बदिन बढ़ रही भुखमरी से बचाने के काम को और ज़्यादा मनसूबाबन्दी और मुकम्मल पलानिंग के साथ अंजाम दें। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द और उसकी अधिकतर उप एवं प्रादेशिक जमीअतों (इकाइयों) सहित अन्य संगठनों, शख्सियतों और शुभचिंतकों

की तरफ से वक़्ती तौर पर गरीबों और कमज़ोरों की भूख मिटाने का अच्छा काम हुआ अल हम्दुलिल्लाह

इस वक़्त फौरी समाधान के तौर पर पैगम्बर मुहम्मद स०अ०व० की पवित्र जीवनी हमारा मार्गदर्शन करती है कि हम मिल बाँट कर खाने की आदत डालें पड़ोसियों और रिश्तेदारों का ख्याल रखने और उनकी ज़रूरत पूरी करने के लिये आम दिनों के मुक़ाबले में इन दिनों में विशेष रूटीन और कामों की सूची में डाल लें। पूरी बस्ती और महल्ले का हर व्यक्ति जिस को अल्लाह तआला ने दो वक़्त का खाना दे रखा है इसमें वह अपने दूसरे गरीब और मोहताज भाइयों को भी शामिल कर लें। सुफ्फा वालों की तरह हर आदमी ज़रूरत के अनुसार उनके एक एक, दो दो तीन तीन शख्स की मुकम्मल या आंशिक जिम्मेदारी ले ले।

मेरे प्रिय दोस्तो और भाइयो! माल व दौलत इन्सान की ज़िन्दगी में रीढ़ की हडडी की हैसियत रखते हैं मगर माल व दौलत ही व्यक्ति, समाज, खानदान और सूसाइटी की गाड़ी को चालने के लिए एकेला ज़रूरी नहीं है बल्कि यह समाज में प्यार, प्रेम, आपसी सहयोग और एक दूसरे को ताक़त देना भी एक माध्यम है। बाकी फुर्सत और मौक़ा महल भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है। एक दूसरे के ग़म में शामिल होना और हमदर्दी करना भी एक माध्यम और एक दूसरे की भलाई भी एक माध्यम है। समाज में जितनी तरह के ज़रूरत मन्द, मोहताज, बेवा, अनाथ, विक्लांग, मरीज़, गरीब, प्रवासी और शरणार्थी हैं इनके अलावा भी बहुत से लोग हैं जिनके हुकूक एक दूसरे पर वाजिब और लागू होते हैं जैसे सेवक और स्वामी, मेहमान व मेज़बान, मालिक व मजदूर, शासक व प्रजा आदि भी समाज के वह महत्वपूर्ण अंग और तत्व हैं जिन के अधिकारों की पासदारी किए बग़ैर हम अपनी ज़िम्मेदारी से मुक्ति नहीं पा सकता और जब तक इन में से हर एक दूसरे को सहयोग न दे समाज की गाड़ी नहीं चल सकती। हमको समाज का भरण पोषण और उनके अधिकारों की जमानत की इस्लामी शिक्षा याद है कि हज़रत अबू हरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अल्लाह के रसूल स०अ०व० से रिवायत करते हुए बताया कि जो शख्स बेवाओं अनाथों और गरीबों के लिये भागदौड़ करता है वह अल्लाह की राह में मुजाहिद जैसा है और ऐसा शख्स तहज्जुद गुज़ार और रात में इबादत करने वाले की तरह है जो थकता नहीं और ऐसे रोज़ेदार की तरह है जो कभी इफ़तार नहीं करता। (सहीह मुस्लिम)

तो हमें हाकिम, सरदार, कारखानादार, मेज़बान, मेहमान, प्रजा सेवक और कारीगर व मुलाज़िम के सिलसिले में भी गौर करना चाहिए और इनके अधिकारों की पासदारी के लिये संजीदा होना चाहिए स्वयं इनमें आपसी सहयोग होना चाहिए। तब जा कर ही हम देश, इन्सानियत और राष्ट्र व समुदाय को दरपेश कोरोना वायरस और इसके बाद कोरोना की चुनौतियों और समस्याओं का मुक़ाबला कर सकते हैं और तारीखी तौर पर यह अनेकों बार साबित हो चुका है कि हम हर तरह के चैलेन्ज का मुक़ाबला करने के लिये पूरी तरह से सक्षम हैं। ज़रूरत है कि जल्द से जल्द अवामी और सरकारी स्तर पर उठ खड़े हों और भूख और हर तरह के हालात का मिल जुल कर मुक़ाबला करें। शासक अपने कर्तव्य अदा करें, अवाम अपनी भूमिका निभाएँ। सरदार और कार्यकर्ता आपस में सहयोग और एक दूसरे का सपोर्ट करें। कारखानादार, वर्कर, मालिक मकान और किरायेदार एक दूसरे का सहयोग करके आगे बढ़ें और मौजूदा संकट से निकलने, हालात पर काबू पाने और दुश्वारियों को आसान बनाने के लिये एक दूसरे के सहयोगी बनें तो हालात पर काबू पा जाएंगे।

हमें एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए

नौशाद अहमद

कोरोना वायरस ने जीवन के हर विभाग के दिशा को और रहन सहन के अन्दाज़ को बदल दिया, हर जगह बेचैनी और अनिश्चितता की स्थिति पैदा हुई है, इस महा मारी से बहुतों ने सबक भी हासिल किया है कि इन्सान कितने बड़े बड़े प्रोग्राम बनाता है, भविष्य के विकास को आंकता है, बड़े बड़े प्रोजेक्ट को पूरा करने के सपने देखता है, अपने कारोबार को आकाश की बुलन्दियों तक ले जाना चाहता है लेकिन मौजूदा स्थिति ने साबित कर दिया कि दुनिया का कोई भी योजना या प्रोग्राम इस संसार की सबसे महान शक्ति अल्लाह की अनुमति के बगैर पूरा नहीं हो सकता।

इस महामारी के दौरान कितने मनसूबे धराशायी हो गये इसके बारे में न तो तादाद बताई जा सकती है और न ही पूर्ण रूप से यह आकलन किया जा सकता है कि दुनिया को कितना आर्थिक नुकसान हुआ महज़ इस सिलसिले में अनुमान और अन्दाजा ही लगाया जा सकता है, सेहत का नुकसान, शिक्षा का नुकसान, सबसे ज़्यादा दुखद जान का नुकसान हो रहा है। इन सब का गहराई से जायजा लिया जाए तो यह एक असीमित नुकसान है। लेकिन इन तमाम नुकसानात के बावजूद सब के लिये दिल से दुआ होनी चाहिए। संसार में कुछ लोग होते हैं जो बड़े से बड़े संकट के अवसर पर भी नकारात्मक सोचते हैं, हम लोगों को ऐसे लोगों की इस्लाह और सुधार की कोशिश करनी चाहिए, अल्लाह सब का भला करे और इस महामारी से उत्पन्न समस्याओं से मानवता को शीघ्रतः निकाल दे। पूरी मानवता को निगेटिव दिशा में जाने से हम सब लोगों को मिल कर बचाना होगा और संकट की इस घड़ी में हम सभी को एक दूसरे का सहयोग करना होगा।

जिन लोगों ने इस महामारी के दौरान मैदान में काम किया और अभी तक काम कर रहे हैं, बीमार लोगों का हर तरह से सहयोग कर रहे हैं निसन्देह ऐसे लोग प्रशंसनीय और सराहनीय हैं ऐसे लोगों का हर एतबार और पहलू से प्रोत्साहन होना चाहिए। रोग किसी को भी लग सकता है। महामारी की चपेट में कोई भी आ सकता है हम लोगों को इस अवसर पर हमदर्दाना और सौहार्द पूर्ण तरीके से सोचना चाहिए, रोग या महामारी को किसी कम्यूनिटी या समुदाय की तरफ संबद्ध करना न्याय संगत नहीं है, कुछ लोगों ने कोविड-१९ को एक समुदाय से जोड़ने और इसकी आड़ में बदनाम करने की कोशिश की, यह एक दुखद स्थिति है जिससे हम सभी लोगों को बचना चाहिए और संकट की इस घड़ी में महामारी से मिल जुल कर मुक़ाबला करना चाहिए। अल्लाह सर्वशक्तिमान है वही इस दुनिया का असल स्वामी है, पालनहार है, हमें उसके बताए गये तरीकों और आदेशों के मुताबिक जीवन यापन करना चाहिए, हम लोग अपने गुनाहों से तौबा करें, उसकी तरफ रूजू हों, एक इंसान दूसरे इन्सान की भरसक मदद करे, अल्लाह ने इन्सान को जो भी नेमत दी है उसका सही स्तेमाल करे, तो वह किसी भी कठिनाई से बचा रह सकता है। मन मानी और इन्सानों के द्वारा अपनी शक्ति का गलत स्तेमाल अल्लाह की नाराज़गी और क्रोध का सबब बन जाती है। अल्लाह हम सभी लोगों को हर कठिनाई, हर संकट से बचाए रखे खास तौर से हर देश वासी को एक दूसरे का भरपूर सहयोग करने की क्षमता दे।

इस्लाम और अम्न व सुरक्षा

इब्ने अहमद नक़वी

आतंकवाद और हिंसा का रिश्ता न किसी धर्म से है न किसी देश से है न किसी काले से न किसी गोरे से, न पश्चिम से न पूर्व से। आतंकवाद एक जुनून है यह जूनन (उन्माद) किसी भी पागल के दिल व दिमाग में बसेरा ले सकता है। आतंकवाद का जुनून न किसी धर्म का मुतालाशी (ढूंढने वाला) होता है, न किसी जाति बिरादरी का, न किसी कम्यूनिटी से उसे मतलब है न किसी एलाक़े और देश से। वह बस एक जुनून है उसे मजनूनों की तलाश होती है। एक आंतकवादी जब आतंकी कार्रवाई का पलान बनाता है तो उस वक़्त उसका रिश्ता, मानवता से, धर्म से, सभ्यता से, समुदाय से और देश से टूट जाता है। उसका संबन्ध केवल शैतान से बाक़ी रह जाता है और दानवता उसकी रग-रग में उसके खून के साथ गर्दिश करने लगती है। उसे किसी धर्म से जोड़ना धर्म का अपमान है और उसे किसी समुदाय और कम्यूनिटी से जोड़ना समुदाय और कम्यूनिटी का अपमान है उसे किसी देश और क्षेत्र से जोड़ना क्षेत्र और देश का अपमान है। उसे किसी घराने से जोड़ना घराने का अपमान है।

आतंकवादी जीवन के लिये कलंक, मानवता के लिये कलंक, धर्म के लिये कलंक और देश के लिये कलंक होता है।

दुनिया में आतंकवादी और उसके आतंकवाद का सबसे बड़ा विरोधी इस्लाम और मुसलमान हैं। आज भी अगर पूरी दुनिया में सर्वे कर लिया जाए और इसका विश्लेषण हो जाए तो पूरी दुनिया को पता चल जाएगा कि मुसलमान अपनी तमाम इल्मी और माली मुश्किलात और अवारिज़ और अमराज़ (कमियों) के बावजूद सबसे ज़्यादा इन्साफ पसन्द, अम्न पसन्द और खुले जेहन व दिमाग के हैं। गेल्प पोल ने अपने सात वर्षीय सर्वे और परिणाम को प्रकाशित कर दिया है और इससे यही बात साबित होती है।

इस्लाम का और मुसलमानों का आतंकवाद से मुतअल्लिक पहले भी यही रवैया (दृष्टिकोण) था और अब भी यही रवैया है। अगर कहीं मुस्लिम नाम रखने वाले कुछ लोग वास्तव में आतंकवाद के अपराधी हों तो उसूली तौर पर उन्हें इस्लाम और मुसलमानों से नहीं जोड़ा जा सकता वह तो ऐसा जुर्म करके फौरी तौर पर (तुरन्त) इस्लाम और मुसलमानों से कट जाते हैं।

- इस्लाम तो वह धर्म है जिसे यह भी गवारा नहीं कि मुसलमान के ज़रिए किसी देशवासी को कांटा भी चुभे।
- इस्लाम ने तो यह शिक्षा दी है कि रासते से तकलीफ देह चीज़ों को हटा देना भी नेकी का काम है।
- इस्लाम यह भी कहता है कि नफरत, गुस्सा, पक्षपात सब ग़लत हैं और ऐसे लोगों की सराहना करता है जो लोगों के उसकाने पर भी गुस्सा पी जाते हैं और लोगों को मआफ कर देते हैं।
- इस्लाम यह भी कहता है

कि किसी के साथ सख्त शैली में बात न करो और इशारे से भी किसी का अपमान न करो, किसी को अपमान करने की नियत से गलत नाम न दो।

❑ उसकी तालीम यह है कि जब एक इन्सान दूसरे इन्सान की मदद करता है तो अल्लाह उसका मददगार होता है, किसी के साथ हमदर्दी और मेहरबानी करने से अल्लाह हमदर्दी और मेहरबानी करता है।

❑ उसने यह भी बताया कि धरती पर अकड़ और घमण्ड के साथ न रहो, विनम्रता के साथ रहो, मानवता और समता का व्यवहार अपनाओ।

❑ उसने सिखया कि समाजी ज़िन्दगी में इन्सान के एहसासात और जजबात का ख्याल रखो किसी के मन को ठेस मत पहुंचाओ और किसी के लिये किसी तरह के दुख का कारण न बनो।

❑ उसने कहा कि इस संसार में जिस के साथ मुसलमान का आपसी मामला हो उसके साथ अच्छा व्यवहार और अच्छे आचरण का प्रदर्शन करे। पानी, छांव, पेड़, पक्षी, इन्सान, जानवर, रास्ता, नदी नाला, राजमार्ग, जन सुविधाएं और सामान मिसाल के तौर पर स्कूल, कुवाँ, पार्क, स्पताल आदि जिसके साथ भी मुसलमान का साबक़ा पड़े उनके साथ उसी तरह का मामला हो जैसे उनका हक़ है, फायदा उठाना है तो ज़रूरत भर, गुज़रना है तो दूसरों की रिआयत (ध्यान) रखते हुए, न इनका गलत स्तेमाल जायज़ है न अवैध कबज़ा और न ख्यानत, न दुख देना है न उन्हें बर्बाद करना है।

❑ इस्लाम की शिक्षाओं में से है कि एक इन्सान ज़िम्मेदार है और हर एक अपने कार्यक्षेत्र में ज़िम्मेदार है और ज़िम्मेदारी के बारे में जवाब देह है।

❑ इस्लाम ने सिखलाया है कि जानवरों को भी बिला वजह न बांध रखो, न सताओ और ज़िन्दा उन्हें निशाना न बनाओ और अगर जानवर पाला है तो उन्हें खिलाने पिलाने की भरपूर जिम्मेदारी लो।

❑ पैग़म्बर मुहम्मद स० ने फरमाया कि जानदार सृष्टि के साथ अच्छा व्यवहार करना नेकी का काम है। जीवित सृष्टि को आराम पहुंचाना, उनको सुरक्षा देना, परेशानी में उनके काम आना, उनको खाना खिलाना सदक़ा (नेकी का काम) है।

❑ पूरे संसार के इन्सानों को अच्छी बातें बतलाना और उनके नफा व नुकसान से उनको आगाह करना मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है।

❑ दुनिया में समता और न्याय स्थापित करना मुसलमानों की जिम्मेदारी है और बदतरीन दुश्मन के साथ भी इन्साफ़ करना अनिवार्य है।

❑ अत्याचार अंधकार है और आख़िरत में पश्चाताप का कारण है, किसी इन्सान और मुसलमान के लिये अत्याचार को वैध नहीं रखा गया।

❑ समाज के कमज़ोर, बूढ़े, अनाथ, बेवा, अपाहिज, ग़रीब मोहताज मरीज़ के साथ विशेष रिआयत की शिक्षा दी गई है और उनके लिये जीवन के सामान और वस्तुएं उपलब्ध करना बड़ा नेक काम माना गया है।

❑ समाज में लोगों की समस्याओं का समाधान करने उन्हें कठिनाइयों से निकालने को (क़ियाम व सियाम) यानी इबादत की श्रेणी में रखा गया है।

❑ राई राई और दाने दाने में मुसलमानों के ऊपर ईमानदारी को ज़रूरी क़रार दिया गया है और

इमानत की संकल्पना (तसौउर) को व्यक्ति व समाज और संसार के दायरे तक विस्तार कर दिया गया है।

❑ पड़ोसी के अधिकार तय हुए यहाँ तक कि अगर सफर में भी कोई वक़्ती तौर पर साथी है तो उसे भी पड़ोसी का दर्जा दिया गया है और उसके लिये अच्छे व्यवहार और आचरण के अधिकार तय हुए।

यह और इस तरह की बहुत से ऐसी इस्लामी शिक्षाएं हैं जिन्होंने पूरे मानव समाज को चलना फिरना रहना सहना और जीना सिखाया और और उन्हें मानवीय और ज्ञानात्मक मूल्यों से सम्मानित किया है। उन्हें भलाई की शिक्षाओं से संवारा आज दिलों में जो इन्सानियत और जेहनों में उदारता पाई जाती है वह इन्हीं शिक्षाओं का परिणाम हैं। इनही शिक्षाओं से इन्सान ने उदारता, विकास और हमदर्दी का सबक़ सीखा है।

इस वक़्त भी ज़रूरी है कि इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में इन्सान अपने मसाइल (समस्याओं) को हल करें और गढ़े हुए मुश्किलात को दूर करें इसके सिवा कोई हल नहीं है बल्कि अन्य विकल्पों से केवल नफरत, फसाद और पक्षपात बढ़ रहा है।

प्रेस रिलीज़

अफ़ग़ानिस्तान में गुरुद्वारा पर हमला अफसोसनाक और सख्त निन्दनीय

३० मार्च २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने अख़बार के नाम जारी एक बयान में हालिया दिनों अफ़ग़ानिस्तान में सिखों के गुरुद्वारा पर हुए हमले की सख्त निन्दा की है और इसे अमानवीय कृत्य क़रार दिया है। उन्होंने कहा कि ऐसे वक़्त में जबकि एक अर्से के बाद अफगानिस्तान के हालात में बेहतरी की उम्मीद बंधी थी, इस अफसोसनाक हमले से हम जैसे करोड़ों अम्न व इन्सानियत पर विश्वास रखने वालों के एहसासात और आशाएं हताहत हुए हैं। धर्मशाला को निशाना बनाना निसन्देह ऐसा अपराध है जिस की क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती और यह आतंकवाद है और यह प्राचीन मुस्लिम सिख मित्रता को खतम करने का शाखिसाना भी हो सकता है जिस से यकीनन सिख, मुसलमान और तमाम अमन पसन्दों को होशियार और चौकन्ना रहने की ज़रूरत है।

सम्माननीय अमीर ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि आतंकवाद चाहे जहां कहीं भी हो और जिस की तरफ से भी हो निन्दनीय है लेकिन इसकी दुष्टता उस वक़्त और ज़्यादा बढ़ जाती है जब किसी समुदाय के धार्मिक स्थल को निशाना बनाया जाए। यही वजह है कि हम आतंकवाद के हर वाक़ए की निन्दा करते आए हैं क्योंकि इस्लाम कभी भी इस तरह के गैर इन्सानी अमानवीय कृत्य की इजाज़त नहीं देता। सम्माननीय अमीर ने कहा कि इस आतंकी हमले का एक अफसोस नाक पहलू यह भी है कि यह ऐसे अकहनीय हालात में अंजाम दिया गया है जबकि पूरा विश्व घातक कोरोना वायरस की चपेट में है और पूरी दुनिया एकता और पूरी चिंता के साथ इस चैलेन्ज का मुकाबला कर रही है। असमाजिक तत्वों और अम्न व शान्ति और मानवता के दुश्मनों ने यह हमला करके यह साबित कर दिया है कि वह अपने आप को कुछ भी कह लें वह इन्सान और मुसलमान नहीं हो सकते।

प्रेस रिलीज में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मोहतरम ने सिख भाइयों से सदभावना व्यक्त करते हुए इस हमले में मरने वालों के परिवारजनों से हार्दिक शोक व्यक्त किया है और अफगानिस्तान सरकार से अपील की है कि वह असल अपराधियों को दण्डित करे और देश में अम्न व कानून और सुरक्षा प्रबन्ध ा को चौकस करे ताकि फुसताई ताकतों को फितना व फसाद और कत्ल व खून का अवसर न मिले।

औलाद की तर्बियत

मौलाना अब्दुर्रऊफ नदवी तुलसीपुर

औलाद को कुरआन मजीद और दीनी किताबों की तालीम दिलाना माँ बाप पर एक ज़रूरी दीनी फरीज़ा है। अच्छी तालीम तर्बियत सदका व खैरात करने से ज़्यादा बेहतर है। माँ बाप को अपनी औलाद को अल्लाह तआला की खुश्नूदी के सांचे में ढ़ालना चाहिए ताकि उन की औलाद सहीह मानों में इस्लाम और मानवता की भलाई के काम आ सकें और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में तन मन धन निछावर कर सकें। हमारे सामने प्रथम काल और निकट भूतपूर्व की मुस्लिम महिलाओं के ऐसे आदर्श मिलते हैं उनमें से कुछ आदर्श और वाक़आत को पाठकों के लिये पेश किया जा रहा है।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के घर अपनी औलाद में चार बेटियाँ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से थीं और पिछले दो शोहरों से एक बेटी और एक बेटा, इन छः औलाद के साथ हज़रत अली भी हज़रत खदीजा के साथ रहते थे। याद रहे कि जब हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत खदीजा से शादी की थी तो अपने चाचा अबू तालिब से अलग रहने लगे थे चूंकि अबू तालिब के पास आल औलाद ज़्यादा थी इस लिये हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को अपने साथ रख लिया गया। हज़रत अली उस वक़्त पांच वर्ष के थे। हज़रत अली के पालने पोसने के बारे में एक लेखक ने किस मज़े की बात लिखी है।

''नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नबुव्वत की ज़िम्मेदारियों ने ऐसा व्यस्त कर रखा था कि आप को घर और बाल बच्चों के लिये वक़्त नहीं मिलता था हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा जो घर को बनाए हुई थीं और हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जो इशारे पाती थीं उन ही के मुताबिक बाल बच्चों का पालन पोषण कर रही थीं। पाँच वर्ष के अली को हज़रत अली बनाने में अगर एक तरफ अल्लाह की रहमत काम कर रही थी तो दूसरी तरफ हज़रत ख़दीजा का भी हाथ था''

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहो अन्हा बड़ी हुईं तो हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो से निकाह हुआ। आप से जो औलादें हुईं उन में से हज़रत हसन हुसैन ज़िन्दा रहे और उन्होंने दीन की जो शानदार ख़िदमात अंजाम दीं, सब जानते हैं यह दोनों हज़रात प्रतिष्ठित और महान कैसे बने इसकी एक झलक देखिए।

हसन व हुसैन दोनों छोटे भाई थे, एक बार खेल ही खेल में लड़ पड़े। फिर दोनों वालिदा (माँ) के पास शिकायत करने लगे हज़रत फातिमा ने दोनों लड़कों की शिकायतें सुनीं, फिर फरमाया :

''मैं यह कुछ सुनना नहीं चाहती कि हसन ने हुसैन को पीटा या हुसैन ने हसन को मैं तो सिर्फ यह जानती हूं कि तुम दोनों लड़े और लड़ाई अल्लाह को पसन्द नहीं

तुम दोनों ने अल्लाह को नाराज़ किया, जिस से अल्लाह तआला नाराज़ उससे मैं भी नाराज़, चलो भागो यहां से दोनों भाइयों ने मां की नाराज़गी देखी झटपट में सुलह कर लिया और मुन्ने मुन्ने हाथ उठा कर अल्लाह से मआफी मांगी''।

इमाम बुख़ारी रह० के बचपन में ही पिता जी का इन्तेक़ाल हो गया, इमाम साहब का पालन पोषण और शिक्षा एवं प्रशिक्षण आप की माँ ने किया। इमाम बुखारी को ''अमीरूल मोमिनीन फिल हदीस'' बनाने में आप की मां की बड़ी भूमिका है। इमाम बुखारी रह० की आंख बचपन में खराब हो गई थी, बीनाई जाती रही, डाक्टर एलाज में असमर्थ हो गए आप की मां बड़ी नेक और इबादत गुज़ार थीं। आपने बेटे की आँखा की बीनाई वापस लाने के लिये अल्लाह से दुआ करती थीं। एक रात इमाम साहब की मां ने हज़रत इब्राहीम अलैहि० को सपने में देखा कि वह फरमा रहे हैं कि तुम्हारे रोने और दुआ करने से तुम्हारे बेटे की आँखों को अल्लाह ने ठीक कर दिया है। वह कहती हैं कि जिस रात को मैंने सपने में देखा उसी की सुबह बेटे की आंखें ठीक हो गयीं। (सीरत इमाम बुख़ारी)

इमाम अहमद बिन हंबल की मां का नाम सफिय्या बिन्ते अब्दुल मालिक शैबानी था बड़ी नेक दीनदार खातून थीं। इमाम अहमद रह० का बयान है कि मैंने अपने पिता को नहीं देखा बचपन में ही उनकी मां उनको खुरासान से लेकर बग़दाद आ गयीं। यहां उन्होंने अपने बेटे की तालीम व तर्बियत का प्रबन्ध किया, हर वक्त उनका ध्यान बेटे की तालीम व तर्बियत पर रहता था। इस तालीम व तर्बियत के नतीजे में यह नौजवान इमाम अहले सुन्नत इमाम अहमद बिन हंबल बन गए। वर्ना बाप की गैर मौजूदगी में बच्चे के बिगड़ने के इमकानात भी होते हैं।

अब्दुर्रहमान इब्ने जौज़ी तीन ही साल के थे कि उनके पिता जी का इन्तेकाल हो गया पालन पोषण की पूरी ज़िम्मेदारी इन की फूफी (बुवा) ने उठा ली, वह बहुत समझदार खातून थीं। कम आयु में ही वह इन्हें ओलमा की संगत में ले जा कर बिठा देती थीं कि इल्म से लगाव बढ़ेगा। वक़्त की हिफाज़त का नतीजा यह निकला कि इमाम इबने जौज़ी दस साल की उम्र में आलिम बन गए और वाज़ व नसीहत करने लगे। आगे चल कर वह बहुत बड़े इमाम बन गए।

सुफियान सौरी बचपन में ही यतीम हो गये थे। उनकी परवरिश (पालन पोषण) और शिक्षा एवं प्रशिक्षण मां ने की उन्होंने अपने बेटे से कहा कि बेटे तुम दीन का ज्ञान हासिल करो मैं सूत कात कर तुम्हारे ख़र्च पूरे करूं गी और फरमाया बेटे जब तुम दस हदीसें याद कर लो तो देखो कि तुम्हारी नेकी और परहेज़गारी में बढ़ोतरी हुई है या नहीं अगर बढ़ोतरी नज़र आए तो समझ लेना चाहिए कि इल्म तुम्हारे हक़ में लाभकारी है और अगर बढ़ोतरी न हो तो फिर यह इल्म तुम्हारे लिये बेकार है।

कहने का मतलब यह है कि यह बड़ी हस्तियां जिन को हम अपने आदर्श समझते हैं आप से आप बड़ी बड़ी हस्ती नहीं बन गयीं इनको महान बनाने में उनकी माओं ने उन पर हर वक़्त ध्यान दिया और जहां और जब ज़रूरत पड़ी बरवक्त रोक टोक और अच्छी तर्बियत की।

(प्रेस रिलीज़)

स्वतंत्रता दिवस सबको मुबारक हो!

भाइयो! आज़ादी का जश्न ज़रूर मनाओ मगर ज़रा याद करो कुर्बानी

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के "अल माहदुल आली लित-तख़स्सुस फिद्-दिरासातिल इस्लामिया" अबुल फज़ल इन्कलेव ओखला में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण

जमीअत के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी का संबोधन

दिल्ली १६ अगस्त २०२०

आज १५ अगस्त है। आज का दिन निसन्देह हमारे राष्ट्रीय व समुदायिक जीवन में बड़ा महत्वपूर्ण है इसलिए कि आज के दिन यह हमारा महान देश भारत अंग्रेज़ों की लगभग ढाई सौ साल की गुलामी से स्वतंत्र हुआ था जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने बिना भेद भाव धर्म व समुदाय असंख्य और अभूतपूर्व जानी व माली कुर्बानियां पेश की थीं। और दार व रसन (मौत) को गले से लगाया था इसलिए इस आज़ादी की नेमत की क़द्र करें और जाने या अनजाने तौर पर ऐसे इक़दाम या कर्म कदापि न करें जो इस आज़ादी की नेमत के विपरीत हों। यह उदगार और ख़्यालात पिछले कल मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मोहतरम मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने व्यक्त किया। वह मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अहले हदीस कम्पलेक्स ओखला नई दिल्ली में स्थित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षणिक संस्था "अल माहदुल आली लित-तख़स्सुस फिद्-दिरासातिल इस्लामिया" अबुल फज़ल इन्कलेव ओखला में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण के बाद संबोधित कर रहे थे।

सम्माननीय अमीर ने अधिकृत कहा कि स्वतंत्रता दिवस का हमारे राष्ट्रीय व समुदायिक जीवन में महत्व का अन्दाज़ा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि आज के लॉक डाउन के ज़माने में भी इस महीने के शुरू से ही पूवर्जों की कुर्बानियों को याद करने का सिलसिला शुरू हो गया था और आज सोशल डिस्टेंसिंग का पूरा ख्याल रखते हुए हम देशवासी पूरे देश में "आज़ादी का जश्न" मना रहे हैं और स्वतंत्रता के नग़मे गुनगुना रहे हैं। "सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा" इस जश्न व गान के साथ प्रिय देश पूरे संसार से अच्छा यह गान ज़रूर गाएं और जश्न व खुशी ज़रूर मनायें। मगर इंसाफ, समता और अम्न शान्ति व एकता, प्रेम और भरपूर प्रयास के साथ भारत को महान और पूरे संसार से अच्छा बनायें। वरना हमें आज़ादी की वास्तविक खुशी इन नारों और नग़मों के ज़रिये प्राप्त नहीं हो सकती और न ही हमारे पूर्वजों की कुर्बानियों का कोई परिणाम मिल सकेगा। सम्माननीय अमीर ने कहा कि आज का दिन बड़ा इतिहासिक और मुबारक व शुभ दिन है इस सुनहरे अवसर पर मैं तमाम देश वासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई पेश करता हूं और नेक मनोकामनाओं का इज़हार करता हूं। साथ ही अपील करता हूं कि हमारे पूर्वजों और राष्ट्रीय मार्गदर्शकों ने स्वतंत्रता का जो वास्तविक सपना देखा था और जिस तरह से "हिन्दू

मुस्लिम सिख ईसाई आपस में सब भाई भाई'' का नारा लगाकर पूरी राष्ट्रीय एकता और सदभावना के साथ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था और देश को साम्राज्यवाद के पंजे से आज़ाद कराया था उसी जज़्बे से हम देश के विकास एवं उन्नति के लिये एकजुट होकर प्रयास करते रहें और हर तरह के भेद भाव से ऊपर उठकर देश के विकास, उत्थान और कल्याण व सफलता का काम करें क्योंकि प्रिय देश में किसी भी तरह का भेद भाव स्वतंत्रता की आत्मा के बिल्कुल प्रतिकूल है।

सम्माननीय अमीर ने कहा कि अफसोस की बात यह है कि आज की पीढ़ियों ने स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ को भुला दिया है। आज़ादी अपने मक़सद को पूरा करने, ठाठ बाट, ज़ुबान व कलम की अनियमितता और बेलगामी से परिपूर्ण होती जा रही है। चाहे इससे अपने देश वासियों को ठेस पहुंचे, उनका दिल आहत हो, उनके एहसासात और भावनाएँ आहत हों, उनके कल्याण एवं सफलता में रूकावट पैदा हो और एक दूसरे के अधिकारों का हनन हो तो जान लीजिये कि यह आज़ादी नहीं बल्कि देश व राष्ट्र के साथ ज़्यादती और ख़्यानत है। अगर इसके विपरीत हमारी ज़बान व कलम अपने देश वासियों के अधिकारों की प्राप्ति के लिए, उनके विकास एवं उन्नति के लिये, उनके कल्याण व सफलता के लिए, अम्न शान्ति को बढ़ावा देने के लिये और राष्ट्रीय सदभावना व सौहार्द की स्थापना के लिये उठती है तो यकीन जानिये हमारे पूवर्जों का सपना साकार हो गया और हमने स्वतंत्रता का मक़सद प्राप्त कर लिया।

सम्माननीय अमीर ने अधिकृत कहा कि यूं तो हर धर्म व मत के लोगों ने स्वतंत्रता की नेमत की प्राप्ति के लिये बड़ी बड़ी कुर्बानियां पेश की हैं लेकिन ओलमा व अवाम अहले हदीस की कुर्बानियां प्रसिद्ध रही हैं जिसका देश के प्रथम प्रधान मंत्री सहित अनगिनत इतिहासकारों और बुद्धजीवीयों ने स्वीकार किया है जिस का हमें सबसे ज़्यादा गुणग्राही होना चाहिए।

सम्माननीय अमीर ने कहा कि ऐसे समय में जबकि प्रिय देश विभिन्न प्रकार की चुनौतियों से दोचार है विशेष रूप से कोरोना वायरस पूरे देश को अपनी लपेट में ले चुका है और पूरा देश राष्ट्रीय एकता के साथ इस वायरस के खिलाफ लड़ाई में एकजुट है जो कि बड़ी ही संतुष्ट जनक बात है लेकिन हमें इस राष्ट्रीय जज़्बे को और ज़्यादा प्रवान चढ़ाने (विकसित करने) की ज़रूरत है कि जब कभी देश को कोई चुनौती दरपेश हो तो हम अपने पूवर्जों के पदचिन्हों पर चलते हुए पूरी एकता के साथ सब मिलकर इसका मुकाबला करेंगे और देश के निर्माण व विकास के लिए किसी तरह की भी कुर्बानी पेश करने से संकोच नहीं करेंगे और आज़ादी की आत्मा को हमेशा जीवित रखेंगे यही स्वतंत्रा दिवस का संदेश है।

प्रेस रिलीज़ के अनुसार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के ''अल माहदुल आली लित-तखस्सुस फिद्दिरासातिल इस्लामिया'' अबुल फज़ल इन्कलेव ओखला दिल्ली में पिछले वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस का समारोह संक्षिप्त स्तर पर आयोजित हुआ और जिस में सिर्फ कुछ महत्वपूर्ण हस्तियों ने सोशल डिसटेंसिंग का ध्यान रखते हुए शिर्कत की। इन में प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस दिल्ली के सचिव मौलाना मुहम्मद इरफान शाकिर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के मुफ्ती जमील अहमद मदनी और प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस के चन्द सदस्यों के अलावा जमीअत के कार्यकर्ता आदि जश्न में शामिल रहे। इस अवसर पर राष्ट्रीय गान गाया गया और मिठाई तक़सीम की गई।

जारी कर्ता

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

(प्रेस रिलीज़)

कोविड-१९ वबा-ए-आम की रोक थाम से मुतअल्लिक़ हमारी ज़िम्मेदारियाँः मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

२३ मार्च २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी ने कहा कि घातक वबा कोरोना वायरस के तेज़ी से फैलाव की रोकथाम के लिये कई राज्य सरकारों ने अपने यहाँ लॉक डाउन का एलान किया है। हम जनहित, आम लोगों की सेहत और जिस्म व जान की सुरक्षा के मददे नज़र इन सरकारों की तरफ से जो सावधानीपूर्वक उपाय किए गये हैं उनमें सहयोग की अपील करते हैं और इन सावधानीपूर्वक उपाय के अलावा इसकी मुकम्मल रोक थाम के लिये स्वास्थ्य के हर संभावित संसाधन भी और ज़्यादा उपलब्ध कराने की ज़रूरत पर ज़ोर देते हैं।

अमीर मोहतरम ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि चूंकि भीड़ भाड़ की तमाम जगहों और बहुत से अहम आफिसों समेत हर समुदाय के धार्मिक स्थानों को भी इस लॉक डाउन में शामिल किया गया है इसलिये बिला तफरीक़ मज़हब व मिल्लत तमाम शहरी इसका ख्याल रखें और अगली सूचना तक ३१ मार्च २०२० तक जिन राज्यों में लॉक डाउन का एलान किया जा चुका है इसका पालन करके इस राष्ट्रीय एवं वैश्विक आपदा से बचाव के लिये भरपूर कोशिश करें और हर संभव उपाय जिससे इसकी रोक थाम में मदद मिल सके, अपनाने में कोताही न करें। इमामों और मुअज़्ज़िनों के अलावा दूसरे सारे लोग अपने घरों में नमाज़ों का एहतमाम करें और ''सल्लू फी रिहालिकुम'' यानी अपने घरों में नमाज़ पढ़ने की तलक़ीन करें क्यों कि यह संक्रामक रोग तेज़ी से एक दूसरे को छूने और क़रीब होने से फैलता है। यक़ीनन इस तरह के सावधानीपूर्वक उपाय अपनाने से हर नागरिक और हर व्यक्ति के हित में है और हमारा यह इक़दाम अल्लाह पर भरोसा करने के विपरीत नहीं हैं मगर अपने घरों में सफ़ाई सुथराई के साथ इबादत, दुआ, अज़्कार और तौबा व इस्तेग्फार का ज़्यादा से ज़्यादा एहतमाम करें और अपने पालनहार से और ज़्यादा रिश्ता जोड़ें और मज़बूत करें। कल तक आप जिस एहतमाम व पाबन्दी के साथ अल्लाह के घरों की तरफ रूजू फरमाते रहे हैं इन्शाअल्लाह इन हालात में भी आप को इन का अज्र व सवाब मिलता रहे गा और आप ''रज्लुन क़लबुहू मुअल्लकुन बिल मसाजिद'' के पात्र ठेहराए जाते रहेंगे।

अमीर मोहतरम ने कहा कि ऐसे मौक़े पर जब कि बहुत सारे कारोबार ठप हो चुके हैं और बसाऔक़ात हुकूमत की चौकसी और कोशिशों के बावजूद आवश्यक चीज़ों की किल्लत का सामना भी हो सकता है, जहाँ एक दूसरे की ज़रूरत का ख़्याल रखना न भूलें वहीं अपने ग़रीब भाइयों और मुसाफ़िर और ज़रूरत मन्द लोगों का भी ख़्याल रखें कि यह किसी बड़ी से बड़ी इबादत से कम नहीं है। अल्लाह तआला देश व मिल्लत और इंसानियत को इस घातक वबा से सुरक्षित रखे। आमीन

(प्रेस रिलीज़)

कोविड-१९ महामारी और अन्य मामलों व हितों को देखते हुए जुमा के बजाए अपने घरों में जुहर की नमाज़ अदा करें: मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

२६ मार्च २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी ने कहा कि घातक वबा कोविड-१९ के तेज़ी से फैलाव की रोकथाम के लिये केन्द्र और राज्य सरकारों ने पूरे मुल्क में लॉक डाउन का एलान किया है। हम जनहित, आम लोगों की सेहत और जिस्म व जान की सुरक्षा के मददे नज़र इन सरकारों की तरफ से जो सावधानीपूर्वक उपाय किए गये हैं उनमें सहयोग की अपील करते हैं और इन सावधानीपूर्वक उपाय के अलावा इसकी मुकम्मल रोक थाम के लिये स्वास्थ्य के हर संभावित संसाधन भी और ज़्यादा उपलब्ध कराने की ज़रूरत पर ज़ोर देते हैं।

अमीर मोहतरम ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि चूंकि भीड़ भाड़ की तमाम जगहों और बहुत से अहम आफिसों समेत हर समुदाय के धार्मिक स्थानों को भी इस लॉक डाउन में शामिल किया गया है इसलिये बिला तफरीक़ मज़हब व मिल्लत तमाम शहरी इसका ख्याल रखें और अगली सूचना १४ अप्रैल २०२० तक इस पर अमल पैरा होकर वैश्विक आपदा से बचाव के लिये भरपूर कोशिश करें और हर संभव उपाय जिससे इसकी रोक थाम में मदद मिल सके, अपनाने में कोताही न करें। क्यों कि यह संक्रामक रोग तेज़ी से एक दूसरे को छूने और क़रीब होने से फैलता है। इसलिए भीड़ भाड़ की जगहों से बचें। बल्कि खुद को कोरनटाइन कर लें बहुत सख्त ज़रूरत के तहत ही घरों से निकलें, और इस दौरान भी सख्त एहतियात करें, मस्जिदों में पांचों वक़्त की नमाज़ों में आप हज़रात ने हालात की नज़ाकतों को समझा और जिस तरह मामले को समझते हुए व्यवहारिकता का सुबूत पेश किया वह निसन्देह संतुष्टिजनक बात है। रह गई जुमा की नमाज़ की बात तो इस सिलसिले में आपसी मश्वरे से तय पाया है कि चूंकि जुमा की नमाज़ का इजतेमा पांचों वक़्त की नमाज़ों से कहीं बड़ा होता है और इसमें संक्षेप के बावजूद ज़्यादा वक़्त लगता है इसलिये कोविड-१९ महामारी और अन्य मामलों व हितों के दृष्टिगत सख्त एहतियात का ख्याल रखते हुए जुमा के दिन भी इमामों मुअज़्जिनों और मस्जिदों के ख़ादिमों के अलावा दूसरे हज़रात अपने घरों में ही जुहर की नमाज़ अदा करें। अल्लाह पर भरोसा के साथ पूरी आह व ज़ारी से दुआ करें कि अल्लाह तआला की रहमतों के दरवाज़े जल्द से जल्द खुल जायें और हर तरह के खौफ़ और मर्ज़ से निजात मिल जाये और अल्लाह के लिए

किसी भी तरह इख़्तेलाफे राय (मतभेद) को पूरी हिकमत और सब्र से काम लेते हुए मसअला न बनने दें और जन्नत के निचले हिस्से में जगह पायें।

अमीर मोहतरम ने कहा कि यक़ीनन इस तरह के सावधानीपूर्वक उपाय अपनाने से हर नागरिक और हर व्यक्ति के हित में है और हमारा यह इक़दाम अल्लाह पर भरोसा करने के विपरीत नहीं हैं मगर अपने घरों में सफ़ाई सुथराई के साथ इबादत, दुआ, अज़्कार और तौबा व इस्तेग्फार का ज़्यादा से ज़्यादा एहतमाम करें और अपने पालनहार से और ज़्यादा रिश्ता जोड़ें और मज़बूत करें। कल तक आप जिस एहतमाम व पाबन्दी के साथ अल्लाह के घरों की तरफ रूजू फरमाते रहे हैं इन्शाअल्लाह इन हालात में भी आप को इन का अज्र व सवाब मिलता रहे गा और आप ''रज्लुन क़लबुहू मुअल्लकुन बिल मसाजिद'' के पात्र ठेहराए जाते रहेंगे।

अमीर मोहतरम ने कहा कि ऐसे मौक़े पर जब कि बहुत सारे कारोबार ठप हो चुके हैं और बसाऔक़ात हुकूमत की चौकसी और कोशिशों के बावजूद आवश्यक चीज़ों की किल्लत का सामना भी हो सकता है, जहाँ एक दूसरे की ज़रूरत का ख़्याल रखना न भूलें वहीं अपने ग़रीब भाइयों और मुसाफ़िर और ज़रूरत मन्द लोगों का भी ख़्याल रखें कि यह किसी बड़ी से बड़ी इबादत से कम नहीं है। अल्लाह तआला देश व मिल्लत और इंसानियत को इस घातक वबा से सुरक्षित रखे। आमीन

अगर मज़दूर मेरे देश के मरते रहे यूं ही

(औरैया मज़दूर हादिसे से प्रभावित होकर)

अगर मज़दूर मेरे देश के मरते रहे यूं ही
तो क्या अंजाम होगा देश का मौला तू ही जाने
ग़म व अन्दोह में डूबा हुआ सारा वतन ही है
मगर कोई नहीं जो बढ़ के उनका हाथ है थामे
यही हीरो जो तामीरे वतन में संगे अव्वल हैं
न जानो तुम न मानो, यूं तो सब संसार है माने
वह मजबूरी की हालते आख़िरी में जब पहुंचते हैं
तो मारे भूक के हैं झोंपड़ों से ख़ुद निकल जाते
कभी वह रेल की पटरी पे हैं सोकर कुचल जाते
तो गाहे रोड जो ख़ुद हैं बनाए, उनपे मर जाते
इलाही हम इसे सुन सुन कर ज़िन्दा लाश हैं बाक़ी
सिसकते, सोग करते, हैं निवाले ज़हर के खाते
अगर यह भूक से मजबूर होकर हैं निकल पड़ते
तो जो असहाबे सीम व ज़र व मुरक्कब हैं क्या करते?
सियासत छोड़ दो नफ़रत की खेती मत करो हर्गिज़
मबादा! तेरा दिल मुर्दा हो, और ईमान मर जाए
अगर यह बेहिस्सी यूं रही जारी तो ऐ असग़र
तो कुल इन्सानियत ही मर जाए, कुछ न रह जाए

(प्रेस रिलीज़)

लॉक डाउन में किए गये विस्तार का खुले दिल से पालन करें

दिल्ली १४ अप्रैल २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी ने कहा है कि निसन्देह घातक महामारी कोरोना वायरस प्रिय देश में तेज़ी के साथ फैल रहा है और ''मर्ज़ बढ़ता गया जूं जूं दवा की'' के अनुसार दिन ब दिन इसके संक्रमितों की तादाद में असाधारण इज़ाफा हो रहा है, इन हालात व स्थिति में केन्द्रीय और राज्य सरकारों के लिये इसके अलावा कोई चारा नहीं रह गया था कि पूरे देश में लगातार २१ दिनों से जारी लाक डाउन की मुददत में ३ मई तक के लिये विस्तार किया जाए। यह हालात का तक़ाज़ा भी है और वक़्त की ज़रूरत भी जिसका हम स्वागत करते हैं और जिस का पालन और समर्थन अपना राष्ट्रीय, समुदायिक और इन्सानी कर्तव्य समझते हैं।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि कोरोना वायरस की रोकथाम के दृष्टिगत ज़रूरी है कि वह नियम और क़ानून जो सरकारों ने निर्धारित किए हैं और तमाम निर्देश जो स्वास्थ्य और मेडिकल संस्थाओं ने दिए हैं या शरीअत ने जिनकी तरफ मार्गदर्शन किया है उनका हम सब मिल कर पहले की तरह खुले दिल से सख्ती के साथ पालन और अनुसरण करें। हालात पर कन्ट्रोल रखने के लिये स्वंय को पूर्ण रूप से काबू में रखें। अल्लाह के बाद कौम के सबसे बड़े शुभचिंतक एवं उपकारक व मसीहा डाक्टरों नर्सों, लैब टैक्नीशियन, सफाई कर्मी और पुलिस विभाग की कुर्बानियों की कद्र और प्रशंसा करें और हर्गिज़ हर्गिज़ उनकी हौसला शिकनी या उनके साथ किसी तरह की बदसुलूकी न करें और चूंकि पिछला लॉक डाउन जिन हालात में आनन फानन लागू हुआ था उनमें बहुतों को शिकायत होना और नित नई परेशानियों का होना अनिवार्य बात थी और ऐसे आवश्यक हालात में कौमों को परेशानियों से दो चार होना भी पड़ता है। इसलिये हुकूमतों को चाहिए कि पिछले लॉक डाउन के तजरबात की रोशनी में इस लॉक डाउन के नियम को सख्ती से लागू करने के साथ साथ बेहतर से बेहतर इक़दामात करें अच्छी से अच्छी सुहूलियात उपलब्ध करायें ताकि कौम पहले जैसी कठिनाइयों से दोचार न हो और देश में खाद्य पदार्थ, दवाएं और मेडिकल व स्वास्थ्य की संस्थाओं केलिये जरूरी संसाधन की किल्लत न हो।

उन्होंने कहा कि इस अवसर पर हम देश के लगभग सवा अरब अवाम खास तौर से मुस्लिम उम्मत से अपील करते हैं कि वह लॉक डाउन से संबन्धित हुकूमत के कानून व नियम, मेडिकल माहिरीन के मश्वरों और शरीअत के आदेशों का पूरे तौर से पैरवी करें पूर्ण रूप से सावधानी बरतते हुए यथा-पूर्व घरों से बिला वजह न निकलें, भीड़ भाड़ की जगहों से बचें, समाजी दूरी और आस-पास की सफाई व सुथराई का ख्याल रखें इस दौरान फर्ज़ नमाज़ें

घरों में अदा करते रहें। जुमा के बजाए जुहर की नमाज़ घरों में पढ़ें। तरावीह की नमाज़ भी घरों में पढ़ें बल्कि इस अवसर को गनीमत जानते हुए घरों ही में ज़्यादा से ज़्यादा तिलावत करें, परिवार के साथ रोजे की बर्कतों और नेकियों को हासिल करने के लिये भरपूर प्रयास करें। गरीबों, मोहताजों और बेरोज़गारों की बुनियादी ज़रूरतों का ख्याल रखें, भूखों के लिये खाने का प्रबन्ध करें। इस्लामी मदारिस दीन के किले हैं उनको भी हर्गिज़ न भूलें और उनका सहयोग जारी रखें इसी तरह मदारिस के प्रतिनिधि हजरात जब तक हालात पूरे तौर से रूटीन पर न आ जाएं हर्गिज़ हर्गिज़ सफर पर न जाएं, अल्लाह पर भरोसा रखें, सब्र व संयम से काम लें। अल्लाह की तरफ रूजू हों ज़्यादा से ज़्यादा नवाफिल दुआओं और तौबा का एहतमाम करें और दुआ करें कि अल्लाह जल्द से जल्द कोरोना वायरस की महामारी से कौम व मिल्लत और इन्सानियत को छुटकारा दिलाए।

हमारी इससे पहले की अपीलों पर अमल और पालन करने के लिये हम आप के बेहद शुक्र गुज़ार हैं।

एलाने दाख़िला

(मदारिस से फ़ारिग़ तलबा के लिए)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था

अलमाहदुल आली लित तख़स्सुस फ़िद दिरासातिल इस्लामी

में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन जारी है। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें। और दाख़िला इमतिहान की तारीख़ का इन्तेज़ार करें।

अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव
जामिया नगर, ओखला, दिल्ली-110025
फोन 011-26946205 , 011-23273407
Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

विशाखापट्टनम गैस लीक घटना अफसोसनाक:

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली ८ मई २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर (अध्यक्ष) मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने गत शुक्रवार विशाखापट्टनम में एक केमिकल प्लांट से गैस लीक घटना में बच्चों सहित लगभग एक दर्जन लोगों के दुखद मृत्यु एवं ३०० से जयादा लोगों के बीमार होने पर अति दुख एवं अफसासे व्यक्त किया है और कहा है कि ऐसे समय में जबकि पूरा मुल्क वैश्विक महामारी कोरोना के कारण लॉक डाउन की मुसीबत और परीक्षाओं से गुजर रहा है इस घटना ने इन में और बढ़ोतरी कर दी है।

अमीर मोहतरम ने अपने बयान में औरंगाबाद ट्रेन हादसा पर भी गहरा रंज व गम व्यक्त किया है जिसमें १६ मजदूर मारे गए हैं और कई ज़ख़्मी हुए हैं। अमीर मोहतरम ने अपने बयान में सरकारों से अपील की है कि इस तरह के प्लांट की देखभाल के लिए और ज्यादा उचित प्रबन्ध करें और दोनों घटनाओं के असल कारणों का पता लगाकर ऐसी घटनाओं की रोकथाम करें ताकि भविश्य में ऐसी दिल दहला देने वाली घटनाएं घटित न हों। इसी तरह अमीर मोहतरम ने अवाम व खवास और हर देश और इंसानियत प्रेमी से पुरजोर अपील की है कि वह हर सतह पर संविधान, नैतिकता और निर्देशों की पाबंदी करें, एक दूसरे की सहायता करें और अपनी जिम्मेदारियों को इंसानी हमदर्दी, आपसी सहयोग और देश भक्ति के जज्बे से अंजाम दें तो इस तरह की घटनाओं की रोकथाम में सहायक हो सकतें हैं औ इस तरह की अनहोनी को टाला जा सकता है।

अमीर मोहतरम ने दोनों हृदय वेधी घटनाओं में मारे गए लोगों के परिवारजनों के साथ संवेदना व्यक्त की है और ज़ख़्मियों से दिली हमदर्दी व्यक्त की है।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

निरन्तर सड़क दुर्घटनाओं में मज़दूरों की लगातार और भयावह मौत अत्यन्त दुखदः मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

दिल्ली १७ मई २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर (अध्यक्ष) मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने यू.पी. के औरैया सहित देश के विभिन्न स्थानों पर विभिन्न सड़क दुर्घटनाओं में कई दर्जन प्रवासी मज़दूरों की दर्दनाक मौत पर गहरे रंज व गम का इज़हार किया है, मरने वालों के परिवारजनों से हार्दिक संवेदना व्यक्त की है और हताहत लोगों से हमदर्दी का इज़हार किया है और कहा है कि यह मज़दूर जो देश के निर्माण एवं विकास में आधारशिला की हैसियत रखते हैं उनकी इस तरह से बेकसी व मजलूमियत और लाचारी की हालत में सड़क व ट्रेन दुर्घटनाओं में अमवात अत्यंत दुखद एवं खेदजनक है। हुकूमतों को इन मज़दूरों के खाने पीने, उनके रहने सहने और उनकी जान की सुरक्षा के प्रभावी इक़दामात करने चाहिएं ताकि इस तरह के हृदयवेधी घटनाएं फिर न हों सकें।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि ऐसे समय में जब कि पूरा देश वैश्विक महामारी कोविड-१९ से जूझ रहा है और रोज़गार के संसाधन बन्द होने की वजह से देश की बड़ी आबादी खाने को मोहताज होती जा रही है और मारे भूख के यह प्रवासी मज़दूर लाखों की तादाद में अपने घरों की वापसी के लिये असहाय पैदल मार्च करने पर मजबूर हैं। इन के साथ इस तरह के हृदय वेधी और दुखद दुर्घटनाओं का घटित होना सभ्य समाज और विकासशील देश के लिये चिन्ता का क्षण है।

अध्यक्ष महोदय ने सरकार और अवाम से अपील की है कि इन प्रवासी मज़दूरों और मोहताजों व मजबूरों की और ज़्यादा देखा भाल के साथ साथ उनके रहने और खाने पीने का भी उचित प्रबन्ध करके इस तरह के और अधिक असुरक्षित और जान लेवा पलायन को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। और इस पर राजनीति करने और एक दूसरे पर आरोप धरने के बजाए अपना धार्मिक, नैतिक, देशीय और मानवीय कर्तव्य समझ कर इन बेबसों के सहयोग में जुट जायें।

अध्यक्ष महोदय ने अपने वक्तव्य में इन दुर्घटनाओं में मरने वालों के परिवारजनों और देश के हर दर्दमन्द दिल रखने वालों को हार्दिक संवेदना पेश की है।

जारी कर्ता
मर्कज़ी जमीअत अहले
हदीस हिन्द

(प्रेस रिलीज़)

ख़ुवाजा मुईनुददीन चिश्ती अजमेरी रह० की शान में गुस्ताख़ी क़ाबिले अफ़सोस

दिल्ली १८ जून २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी ने एक टीवी चैनल के ऐंकर के ज़रिये खुवाजा मुईनुददीन चिश्ती रह० की शान में गुस्ताखी (दुष्टता) किये जाने पर अफसोस का इज़हार किया है और हुकूमतों से उसके खिलाफ तादीबी कार्रवाई करने की मांग की है।

अमीर (अध्यक्ष) महोदय ने कहा कि खुवाजा मुईनुददीन चिश्ती रह० हिन्दुस्तान में अम्न व मानवता के झण्डावाहक थे। उन्होंने देश में समाज सुधार और सांप्रदायिक सदभावना की परंपरा को मज़बूत और स्थिर किया है। यही वजह है कि उनको बिना मज़हब के अन्तर के श्रद्धा और सम्मान की निगाह से देखा जाता है।

सम्माननीय अध्यक्ष ने कहा कि ऐसे समय में जबकि पूरा देश कोविड-१९ की महामारी से पूरे राष्ट्रीय जजबे से लड़ रहा है और चीन वगैरह की घुसपैठ के ख़िलाफ़ पूरी एकता से ख़ड़ा है, बाज़ वह तत्व जिनमें अफसोस की बात है कि अपनी मनसबी ज़िम्मेदारियों को भूल करके मीडिया का एक बड़ा जत्था भी शामिल हो गया है जिन को देश का हित प्रिय नहीं है वह यदा-कदा विभिन्न वर्गों की आस्था और महान हस्तियों के सिलसिले में विवादित और दिल को ठेस पहुंचाने वाला बयान देकर इस परंपरागत राष्ट्रीय एकता और सदभावना को ख़तम करना चाहते हैं। इस अवसर पर हम यह बता देना ज़रूरी समझते हैं कि दुनिया के तमाम बड़े बुजुर्गों और पूर्वजों के किसी फर्द की शान में गुस्ताखी और दिल आज़ारी, सब की दिल अज़ारी, एक तरह की फितना परदाज़ी (फैलाने) और मानव सम्मान, दीन व बुद्धि की सुरक्षा के विरूद्ध है। इसलिये किसी बड़े के हक़ में ऐसा हर्गिज़ हर्गिज़ नहीं होना चाहिए अतः सरकारों को ऐसे तत्वों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही करनी चाहिए और देश के अम्न व अमान के साथ खेलवाड़ करने वालों को क़रार वाक़ई (जुर्म के अनुसार) सज़ा देनी चाहिए ताकि फिर कोई दुबारा किसी बड़े बुज़ुर्ग के सिलसिले में इस तरह की हर्कत न कर सके।

सम्माननीय अध्यक्ष ने अपने बयान में अवाम व ख़वास (साधारण व असाधारण) से अपील की है कि वह हर हाल में अम्न व क़ानून बनाए रखें किसी भी तरह की उत्तेजना से दूर रहें और अम्न व कानून को हाथ में लेने से मुकम्मल तौर पर परहेज़ करें।

(प्रेस रिलीज़)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पूर्व उपाध्यक्ष मौलाना अब्दुल हई इस्लाही का निधन

दिल्ली १० सितंबर २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी ने जमाअत अहले हदीस की महान हस्ती प्रसिद्ध इस्लामी विद्वान और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पूर्व नायब अमीर (उपाध्यक्ष) मौलाना अब्दुल हई इस्लाही के निधान पर गहरे रंज व गम का इज़हार (व्यक्त) किया है और उनके इन्तेक़ाल को जमाअत और देश व समाज का बड़ा ख़सारा क़रार दिया है उनका पिछली शाम को दीनी, दावती और समाजी सेवाओं से भरपूर ज़िन्दगी गुज़ार कर लम्बी बीमारी के बाद लगभग १०५ साल की उम्र में पैतृक भूमि खण्डेला में इन्तेकाल हो गया। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैहि राजिऊन।

अमीर मोहतरम ने कहा कि मौलाना इस्लाही १६१५ ई० में राजस्थान के कसबा खण्डेला में एक दीनदार घराने में पैदा हुए और खालिस दीनी व इलमी माहौल में उनकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गाँव के मकतब में हासिल की फिर उच्च्य शिक्षा मदर्सा मिस्बाहुल उलूम से हासिल की। वह नगर पालिका खण्डेला के चालीस वर्षों तक चियरमैन रहे। इस दौरान पूरे क़सबे में बड़े स्तर पर कल्याणकारी काम किए। आप काफी अर्से तक जिला कांग्रेस कमेटी सीकर के उपाध्यक्ष और खण्डेला के अधयक्ष रहे। इन सियासी व समाजी पदों पर आसीन रहते हुए भी दीनी कामों और जमाअती कामों में अत्यंत सक्रिय रहे। तालीम व तर्बियत के लिये मदर्सा खदीजतुल कुबरा के नाम से एक संस्था स्थापित की। प्रादेशिक जमीअत अहले हदीस राजस्थान के लगभग २५ साल तक सचिव रहे और लगभग इतनी ही मुददत तक अमीर के पद पर विराजमान रहे। इस दौरान उन्होंने पूरे प्रदेश का दौरा करके जमाअती इकाइयों को संगठित किया और समारोहों का आयोजन करके दनी जागरूकता पैदा की। अल्लाह उनकी नेकियों को कुबूल फरमाए। उनका निधन केवल उनके परिवार ही नहीं बल्कि पूरी जमाअत और देश व समाज का बड़ा ख़सारा है जो कि अपने एक सक्रिय और कामयाब समाज सेवक से वंचित हो गए।

मौलाना के पसमांदगान में तीन बेटे दो बेटियां और कई पोते पोतियां और निवासे व निवासियां हैं। हम परिवार वालों के दुख में बराबर के साझीदार हैं और दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला उनकी खताओं को मआफ करे जन्नतुल फिरदौस में जगह दे और जमाअत को उनका अच्छा विकल्प दे। अमीर मोहतरम के अलावा जमीअत के अन्य पदधारियों और कार्यकर्ताओं ने परिवार वालों से शोक व्यक्त किया है और उनकी मग्फिरत की दुआ की है। (सारांश)

(प्रेस रिलीज़)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पूर्व उपाध्यक्ष मौलाना शैख ऐनुल बारी आलियावी का इन्तेक़ाल

दिल्ली १६ मई २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पूर्व उपाध्यक्ष, सूबाई जमीअत अहले हदीस पश्चिम बंगाल के पूर्व अमीर, बंगला, उर्दू भाषाओं में तीन दर्जन से अधिक दावती व तर्बियती किताबों के लेखक, आलिया यूनीवर्सिटी कोलकाता के पूर्व प्रोफेसर, अरबी, उर्दू और बंगला भाषा व साहित्य के माहिर, प्रसिद्ध इस्लामी स्कालर, कुरआन के टीकाकार, मौलाना ऐनुल बारी आलियावी के इन्तेकाल पर गहरे रंज व गम का इज़हार किया है और उनकी मौत को देश, समुदाय और जमाअत का बड़ा ख़सारा क़रार दिया है।

अमीर मोहतरम ने कहा कि मौलाना शैख ऐनुल बारी आलियावी एक लंबी मुददत तक सूबाई जमीअत अहले हदीस पश्चिम बंगाल के अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के नायब अमीर (उपाध्यक्ष) जामिया सलफिया की कार्य समिति के सदस्य और हिन्दुस्तान में आई. डी. बी के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि रहे। जब तक सेहत ने साथ दिया मर्कज़ी जमीअत की मीटिंग, सेमीनारों और कांफ्रेन्सों में शरीक होते रहे और जमीअत के विकास और तरक़्की के संबन्ध में अपनी राय देते रहे। उन्होंने अपनी जुबान से बड़ी ख़िदमत की। विभिन्न दीनी व इस्लामी विषय पर उनकी तीन दर्जन से अधिक किताबें हैं। मर्कज़ी जमीअत ने उनकी विभिन्न सेवाओं के एतराफ में एवार्ड से सम्मानित किया था।

अमीर मोहतरम मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने पिछले दिनों एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ मौलाना की इयादत की थी। अफसोस कि २१ रमज़ानुल मुबारक १४४१ हिजरी अनुसार १५ मई २०२० को इफतार से पहले आबाई वतन कोलकाता में ७५ साल की उम्र में इन्तेकाल हो गया।

पसमांदगान में बेवा, चार लड़के, तीन लड़कियां, कई पोते पोतियां और निवासे निवासियां हैं। अल्लाह उनकी मग्फ़िरत फरमाए, जन्नतुल फिरदौस में जगह और जमाअत को उनका अच्छा विकल्प दे।

प्रेस रिलीज़ के अनुसार मर्कज़ी जमीअत के अन्य पदधारियों सदस्यों और कार्यकर्ताओं ने मौलाना के इन्तेकाल पर गहरे रंज व ग़म का इज़हार किया है और मरहूम की मग़्फिरत की दुआ की है।

(प्रेस रिलीज़ का सारांश)

(प्रेस रिलीज़)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पूर्व उप महा सचिव मौलाना मुहम्मद मुकीम फैज़ी का निधन

दिल्ली २ अगस्त २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी ने अपनी एक प्रेस रिलीज में जमाअत अहले हदीस के प्रसिद्ध इस्लामी विद्वान और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के पूर्व उप महा सचिव, दावती, तालीमी और संगठनात्मक योग्यताओं से मालामाल और मंहज व मसलक के मामले में किसी से कोई समझौता न करने वाले निडर सिपाही मौलाना मुहम्मद मुक़ीम फैज़ी के इन्तेकाल पर गहरे रंज व गम का इज़हार करते हुए उनके इन्तेकाल को देश, समुदाय जामअत और ज्ञानात्मक संसार का बड़ा ख़सारा क़रार दिया है।

अमीर मोहतरम ने कहा कि मौलाना मुहम्मद मुकीम फैज़ी की पैतृक भूमि बहरापुर प्रताप गढ़ यूपी है इनकी पैदाइश कोलकाता में हुई थी इनकी शिक्षा रियाजुल उलूम दिल्ली, फैजे आम मऊ और जामियतुल मलिक में हुई। उन्होंने गुलबर्गा, प्रतापगढ़ और जामिया रहमानिया में पठन पाठन का कार्य किया।

आप ने दावत और संगठन के मैदान में उल्लेखनीय सेवाएं अंजाम दीं। जमीअत अहले हदीस मुंबई के उप सचिव चयनित हुए। संगठनात्मक मामलों में आप की रूचि और कुशलता इतनी बढ़ी कि आप मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के उप महा सचिव चयनिय हो गए। देश भर का दौरा करके मंहज व मसलक का प्रचार और बड़े बड़े प्रोग्रामों और कांफ्रेन्सों में जमीअत का प्रतिनिधि ुत्व किया। आप की भाषण शैली बड़ी प्रभावी थी। अवाम में तर्कसंगत तक़रीर के लिये प्रसिद्ध थे।

आप ने संबोधन के मैदान के अलावा लेखन, संकलन और पत्रकारिता में भी नाम कमाया। उन्होंने कई किताबों का अनुवाद भी किया। वह मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के आर्गन पाक्षिक जरीदा तर्जमान दिल्ली के संपादक भी रहे। उनकी एक खूबी हमेशा याद रहेगी कि उनको कैन्सर का मर्ज था बार बार आपरेशन के बावजूद कभी हिम्मत नहीं हारी और तबीअत ठीक न होने के बावजूद दावत के कामों में सक्रिय रहे।

अमीर मोहतरम ने अपने अखबारी बयान में कहा कि उनका इन्तेकाल न केवल उनके परिवार बल्कि पूरी जमाअत व समुदाय का खसारा है। उनकी वफात से हम ने एक इस्लामी स्कालर, वक्ता, अध यापक ही नहीं बल्कि एक बेहतरीन प्रबन्धक को खो दिया। दुआ है कि अल्लाह तआला उनकी दावती कामों को कुबूल फरमाये और पसमांदगान को सबूरे जमील और जमाअत को उनका विकल्प अता फरमाए। अमीर मोहतरम समेत मर्कज़ी जमीअत के अन्य पदधारियों और कार्यकर्ताओं ने उनके इन्तेकाल पर गहरे रंज व गम का इज़हार और पसमांदगान से शोक व्यक्त किया है और उनकी मग़्फिरत और दरजात की बुलन्दी के लिये दुआ की है। **(सारांश)**

(प्रेस रिलीज़)

हिन्दुस्तान की प्रसिद्ध दीनी, तालीमी, कल्याणकारी और समाजी शख़्सियत डा० अब्दुल बारी साहब का इन्तेक़ाल दुखद

दिल्ली १० जुलाई २०२०

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द से जारी एक अख़बारी बयान में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असग़र अली इमाम महदी सलफी ने अख़बार के नाम जारी एक बयान में उत्तरी भारत की महान दीनी पाठशाला जामिया इस्लामिया ख़ैरूल उलूम डुमरिया गंज यू.पी. के संस्थापक एवं मिसाली नाज़िम, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की सलाहकार समिति के सदस्य, जामिया सलफिया वाराणसी की मज्लिसे मुनतज़िमा के सदस्य, माहिर डाक्टर, प्रसिद्ध दीनी, तालीमी रिफाही (कल्याणकारी) और समाजी शख्सियत डा० अब्दुल बारी साहब के इन्तेकाल पर गहरे रंज व गम का इजहार किया है और इनकी मौत को देश मिल्लत और जमाअत का बड़ा ख़सारा क़रार दिया है।

उन्होंने कहा कि डा० साहब बड़े चरित्रवान, विनम्र, मेहमान नवाज़, ओलमा के कद्रदान, कौमी व मिल्ली ग़ैरत से सुसज्जित, मज़बूत संकल्प, दृढ़ विश्वास, और निरन्तर कर्म पर यकीन रखने वाले और जमाअत व जमीअत के बड़े हमदर्द और शुभचिंतक थे। दीनी, तालीमी, समाजी और रिफाही कामों में हमेशा आगे आगे रहते थे आप का पैतृक भूमि कुनडऊ बौंडिहार उत्तर प्रदेश है जहां १६३५ ई० में आप का जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा जामिया सिराजुल उलूम कुनडऊ बौंडिहार से प्राप्त की कुछ माह जामिया रहमानिया दिल्ली से भी तालीम हासिल की और मर्दसा रहमानिया वाराणसी से आलिमियत की सनद हासिल की। १६६० ई० में तिब्बिया कालेज लखनऊ से मेडिकल की डिग्री हासिल की। फिर डुमरिया गंज में किलीनिक से मानव सेवा से जुड़ गए। आप ज्ञान के बग़दाद डुमरिया गंज के बुनियाद गुज़ारों (संस्थापकों) में से थे जहां आपने सबसे पहले रोडवेज़ बस स्टाप के पास एक मस्जिद और मदर्सा की बुनियाद रखी और १६७६ में जामिया खैरूल उलमू की शक्ल में एक महान पाठशाला की बुनियाद डाली और इस तरह धीरे धीरे कुल्लियुत तैइबात, खैर टेक्निकल कालेज और दर्जनों रिफाही व तालीमी एदारे वजूद में आते गए और आज देश और एलाक़े के हज़ारों क्षात्र और क्षात्राएं आपके द्वारा स्थापित एदारों से दीनी और आधुनिक शिक्षा प्राप्त करके कौम व मिल्लत को लाभान्वित करने का माध्यम बन रहे हैं जो कि आपके लिये सदक-ए-जारिया हैं इंशाअल्लाह। आप शारीरिक डाक्टर होने के साथ साथ आध यात्मिक डाक्टर भी थे आप की ज़ात से सिर्फ ज़िला बस्ती गोण्डा ही नहीं बल्कि पूरा हिन्दुस्तान किसी न किसी पहलू से लाभान्वित हो रहा था, ऐसी बाहिम्मत, मुख्लिस और जमाअत व जमीअत के हमदर्द, शुभचिंतक और मेहन्ती शख्सियत का मिलना मुश्किल है।

प्रेस रिलीज़ के मुताबिक मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अन्य जिम्मेदारान, सदस्यगण और कार्यकर्ताओं ने भी डाक्टर साहब के इन्तेक़ाल पर गहरे रंज व अफसोस का इज़हार किया है और उनकी मग्फिरत और दरजात की बुलन्दी के लिये दुआ की है। **(सारांश)**

मानवता के शुभचिंतक पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खुर्शीद आलम मदनी पटना

मानवता पर अल्लाह ने सबसे बड़ा उपकार और इंआम किया कि उसके मार्गदर्शन के लिये अपनी सबसे बेहतरीन सृष्टि और अफजल रसूल पैगम्बर को भेजा और उन पर मार्गदर्शन के लिये कुरआन करीम को नाज़िल किया जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''आप कह दीजिये कि ऐ लोगो! मैं तुम सब की तरफ उस अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं जिस की बादशाही तमाम आसमानों और ज़मीन में है'' (सूरे आराफ-१५८)

तमाम इन्सानों की तरफ अल्लाह का भेजा हुआ यह रसूल पूरी मानवता का सच्चा हमदर्द, मुख्लिस, और उनके मार्गदर्शन के लिये बिलकुल बेक़रार व बेचैन था। आप के दिल ममें मानवता की सफलता का जजबा हर समय भरा रहता था आप इसी चिंता में रहते थे कि मानवता की भलाई और बेहतरी कैसे हो? वह जहन्नम की आग से कैसे बच जाए और जन्नत कैसे हासिल कर ले? वह मार्गदर्शन की राह पर कैसे लग जाए? इन्सानियत से प्यार और सच्चा दर्द रखने वालों की यही हालत होती है। वह ठीक अपनी मौत के वक्त भी अपने चचा अबू तालिब को इस्लाम की तरफ बुला रहे थे चचा कलिमा पढ़ लीजिए, मैं आपके ईमान की गवाही दूंगा वह नबी यह सहन नहीं कर सकते कि मेरे जैसा ही इन्सान आग का ईंधन बन जाए, ऐसी हौलनाक आग जिसके शोले कभी नहीं बुझें गे और इसकी गवाही अल्लाह के अलावा कौन दे सकता है। ''लगता है आप उनके मार्गदर्शन के शौक़ में घुल जाएंगे'' (कुरआन की सूरे कहफ की आयत ६ का अर्थ)

इन्सानियत के शुभचिंतक पैगम्बर मुहम्मद स० फरमा रहे हैं मेरी मिसाल उस शख्स की तरह है जिसने रोशनी के लिये आग जलाई जिस पर परवाने टूट पड़ते हैं वह कोशिश करता है कि यह परवाने किसी तरह आग से बच जाएं मगर वह मानते नहीं ऐसा ही मेरा हाल है मैं तुम्हारा दामन पकड़ पकड़ कर जहन्नम की आग से रोक रहा हूं और तुम हो कि इसमें गिरे जा रहे हो। (बुखारी-मुस्मिल)

स्पष्ट रहे कि कुरआन करीम ने सफलता का जो कानसेप्ट, पेश किया वह अपने अन्दर बड़ी गहराई और विस्तार रखता है और इस सफलता का संबन्ध केवल दुनियावी ज़िन्दगी की कामयाबी से नहीं बल्कि आखिरत की ज़िन्दगी से भी है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया ''पस जो शख्स आग से हटा दिया जाए और जन्नत में दाखिल कर दिया जाए बेशक वह कामयाब हो गया'' (आल इमरान-१८५)

आप को नबी बनाये जाने से पहले मानवता ने सुरक्षा और उसकी सफलता पर आधारित एक सभा परिषद बनाई गई। मक्का के दर्दमन्दों ने मक्का के समाजी और सियासी अम्न व अमान के लिये अब्दुल्लाह

बिन जदआन के घर पर जमा हुए जिस में आपस में तय तमाम हुआ कि हम सब मिल कर अत्याचार को रोकेंगे। प्रताड़ितों और मज़लूमों की मदद करेंगे। यह समझौता ''हिलफुल फजूल'' के नाम से मश्हूर है और इसका वर्णन सीरत की तमाम किताबों में मौजूद है।

इस मुआहदे (संधि) और समझौते में पैगम्बर हज़रत मुहम्मद स० ने शिर्कत की और व्यवहारिक रूप से इसमें हिस्सा किया और जब आप नबी बनाए गये तो फरमाया कि इस मुआहदे के मुताबिक़ आज भी अगर मुझे कोई बुलाए तो मैं हाज़िर हूं। (इब्ने हिशाम-१४०)

इन्सानियत से सच्ची मुहब्बत रखने वाले इस पैगम्बर ने जब कभी अपनी क़ौम के अन्दर मतभेद को देखा या महसूस किया कि यह मतभेद आगे बढ़ कर एक बड़े फितने और झगड़े का रूप धारण कर सकता है और लड़ाई और झगड़े का बाज़ार गर्म हो सकता है तो तुरन्त अपनी अकलमन्दी सूझ बूझ और बुद्धिमत्ता से हल करके अपनी कौम को बड़े फितने और झगड़े से बचा लिया।

काबा के नव निमार्ण के अवसर पर कुरैश के बीच हजरे असवद को उसकी जगह पर पलान्ट करने के सिलसिले में मतभेद हुआ। यह वाक़ेआ आप के नबी बनाये जाने से पांच साल पहले का है उस वक़्त पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्र ३५ साल थी।

कुरैश के सबसे उमर दराज़ अबू उमैया का प्रस्ताव यह था कि कल सुबह जो शख्स इस दर्वाजे से दाख़िल होगा वह इस मामले का फैसला करेगा चुनान्चे सबसे पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दाखिल हुए आप को देख कर सब पुकार उठे यह एमानतदार हैं और हम इनके फैसले पर राज़ी और सहमत हैं चुनान्चे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक चादर मंगवा कर चादर के बीच में हजरे असवद को रखा और वह चारों सरदार जो पेश पेश थे उनसे कहा कि इस चादर के एक एक कोने को पकड़ कर इसे हजरे असवद की जगह तक लाएं फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ से उठा कर उसकी जगह पर रख दिया।

जब आप पर वह्य के आने का सिलसिला शुरू हुआ और हैरान व परेशान होकर गार से वापस लौटे तो पहले हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहो अन्हा को इसकी सूचना दी तो हज़रत खदीजा का रिमार्कस आप के बारे में यह थे ''घबरायें नहीं आप रिश्ता नाता जोड़ते हैं, रिश्तेदारों का हक़ अदा करते हैं? कोई थका हुआ बोझ से लाद हुआ नज़र आता है तो उसका बोझ अपने सर उठा लेते हैं गरीबों को कमा कर देते हैं उनकी मदद करते हैं, बेरोज़गारों को रोज़गार देते हैं, बड़े मेहमान नवाज़ हैं, (बुखारी) प्राकृतिक आपदा और मुसीबतों में आप सहयोग और मदद करते हैं यानी कल्याणकारी और वेलफियर का काम करते हैं जो इन्सानियत का हमदर्द और शुभचिंतक हो गा अल्लाह उसे कैसे बर्बाद होने देगा।''

यह उस जीवन साथी के ख्यालात और उद्गार हैं जिन के साथ आप की ज़िन्दगी के १५ साल बीत चुके थे बीवी पति के राज़ से वाक़िफ होती है शौहर की कोई खूबी और सख्ती उससे छिपी नहीं रह सकती।